कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

प्रेम-नीर में घुले रंग से हृदय स्नेह में रंग जायें;
मिलन का ये त्यौहार हो सार्थक वनवासी को गले लगायें।

40वें वार्षिकोत्सव की झलकियां

कल्याण भारती के वार्षिक विशेषांक का विमोचन करते हुए

श्री जगदम्बा मल्ल का अभिवादन करते शंकरलाल जी हांकिम

श्रीराम के चित्र पर पुष्पार्पण करते हुए मुख्य अतिथि पूजा गुप्ता

मुख्य वक्ता श्री अुतल जोग का उद्‌बोधन

कर्मयोगी नाटक के संयोजक एवं कलाकार

नाट्य निर्देशिका शुभ्रा अग्रवाल का अभिनंदन करते हुए अतुल जोग

कर्मयोगी नाटक का भावपूर्ण दृश्य

भजन कीर्त्तन करते हुए नाटक के कलाकार

अतुल जी के उद्‌बोधन ने एकात्मता का भाव जगाया।
'कर्मयोगी' में बसंतराव के स्मरण से हृदय भर आया।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 31, अंक 1
जनवरी-मार्च 2020 (विक्रम संवत् 2077)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद

–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता, डॉ. रंजना त्रिपाठी

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7
दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
24/25, डबसन लेन, 1 तल्ला
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- संपादकीय... 2
- जनजाति धर्म-संस्कृति-परंपरा ... 3
- प्रेरक प्रसंग 4
- वसंतराव बोलते कम थे लेकिन 5
- कोलकाता-हावड़ा महानगर का... 7
- जम्मू-कश्मीर में भी ... 8
- मकर संक्रांति पर कल्याण ... 9
- गोसाबा में चिकित्सा शिविर ... 10
- रोमाञ्चक और चिरस्मरणीय ... 11
- किशोर बालकों ने भी सीखी... 12
- ममता, स्नेह और करुणा... 13
- शोक संवाद... 14
- अनुकरणीय... 15
- बोधकथा ... 16
- कविता... 16

संपादकीय...

वनवासी बंधु को प्रेम और स्नेह के रंगों से सराबोर करें

होली उल्लास और उमंग का त्योहार है। यह केवल रंगों का त्योहार ही नहीं है, अपितु स्वयं जीवन का जश्न है। हमारे यहाँ हर त्योहार का एक गहरा संदेश होता है। मसलन दीपावली अंधकार,अशुभ और बुरी ताकतों को दूर करती है। जबकि होली हमारे जीवन को अनेक रंगों से भर देती है। यह दोस्ती, भाईचारा और मनमुटाव दूर करने का त्योहार है। इस अवसर पर लोग एक दूसरे को गले लगाते हैं, कटुता और नाराजगी को भूल जाते हैं और फिर प्यार व मोहब्बत से शेष जीवन व्यतीत करने का वायदा करते हैं। होली सामाजिक भेदभाव को मिटा देती है और लोगों को एक दूसरे के करीब लाती है। वस्तुत: रंग खेलने से एक दिन पहले जो होलिका दहन होता है वह आपसी तमाम दुर्भावनाओं को जलाकर राख कर देने का प्रतीक है। अत: होली समता और समानता का संदेश देती है। इस पर्व का यह संदेश है कि संयम और हिम्मत के साथ व्यक्ति को जीवन के सभी रंगों का अनुभव करना चाहिए।

लेकिन आज देश की परिस्थितियाँ जन-मन-का रंजन करने वाली नहीं बल्कि आशा और विश्वास को तोड़ने वाली हैं। एक ओर जिहादी आतंकवाद, माओवादी नक्सलवाद, भ्रष्टाचार, आर्थिक असंतुलन व महंगाई जैसी गंभीर समस्याएँ तथा कोरोना जैसी महामारी देशवासियों के जीवन में चुनौती बनकर खड़ी हैं तो दूसरी ओर राष्ट्रीय सुरक्षा पर पाकिस्तान और चीन की दुरभिसंधियाँ फन ताने बैठी हैं। राष्ट्र की एकात्मता और सामाजिक ताना-बाना छिन्न-भिन्न हो रहा है। चहुँओर एक कुहासा सा छाया दिखता है। यह समय बहुत ही कठिन चुनौती से भरा है। एक ओर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी विकास के नए सोपान तय कर रहे हैं और हर घर में रोशनी, हर घर में खुशहाली लाने की साधना में रत हैं दूसरी ओर विनाश और अंधेरे के प्रतिनिधि स्वयं के स्वार्थों की सिद्धि हेतु आतंक एवं अन्याय की पराकाष्ठा कर रहे हैं। परन्तु भारतीय मनीषियों का दिया मंत्र 'वयं अमृतस्यपुत्रा:' जीवन की गति को थमने नहीं देता और सारी विडम्बनाओं को पार कर उमंगों से भरा एक उल्लासमय संसार दिखाई दे रहा है। हमने केवल अपने लिए जीना नहीं सीखा, बल्कि सर्वे भवन्तु सुखिन: की अवधारणा हमारे जीवन की प्रेरणा है। हमारे जीवन का लक्ष्य स्वयं अपने लिए साधन और सुविधाएं बटोरना नहीं अपितु अपने समाज के बंधुओं की पीड़ा एवं दु:ख दर्द को आत्मसात् करते हुए निरन्तर निष्काम कर्म एवं परम तत्व की प्राप्ति है।

कल्याण आश्रम के माध्यम से कोलकाता-हावड़ा महानगर के कार्यकर्ताओं ने सदियों से उपेक्षित वनवासी बंधुओं की अखण्ड सेवा और उन्हें मुख्य धारा में लौटाने का व्रत स्वीकार किया है। होली के महापर्व पर हम सब मिलकर संकल्प करें कि सकारात्मक भावों से वनवासी के साथ अपरिचय की दीवार ढहायेंगे ताकि परिचय और बंधु भाव आत्मीय हो उठे। आइये! प्यार और स्नेह के अमिट रंगों से अपने वनवासी बंधु को रंग कर अपना जीवन सार्थक करें। एकजुटता और सद्भावना के रंगों से देश, समाज और दुनिया को गुलजार करें। इति शुभम् ❑

-स्नेहलता वैद

जनजाति धर्म-संस्कृति-परंपरा के साथ हो रही छेडछाड़ बंद हो

- रमेश बाबू, अ.भा. श्रद्धाजागरण प्रमुख

जनजति समाज के परंपरागत धर्म संस्कृति, भारत की सनातन संस्कृति का अभिन्न अंग है। वेदों में वर्णित जीवन पद्धति के आधार पर अनादि काल से जीवन जी रहे अपने जनजाति बन्धु भारत के सनातन समाज की रीढ़ है। भारतीय संस्कृति का आविर्भाव गिरिकन्दरों से होने के कारण इसे अरण्य संस्कृति भी कहा जाता है।

'माता भूमि पुत्रोऽहमपृथिव्या:' यह अथर्ववेद की ऋचा है। इस ऋचा में जो भावना है इसको जीवन में उतारने वाला जनजाति समाज है। प्रकृति में परमेश्वर को देखने वाला यह समाज प्रकृति के साथ सामंजस्य रखकर अपना दैनंदिन जीवन व्यतीत करता है। भारतीय समाज में सूर्य, चन्द्र, नवग्रह, वृक्ष, नाग, नदि, धरती आदि में देवत्व की दर्शन कर श्रद्धा और भक्ति के साथ पेश आने की परंपरा प्राचीन काल से इस समाज में विद्यमान है। यह भाव उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक, कुछेक विदेशी मतावलंबियों को छोड़कर, बाकी सभी में समान रूप से पाये जाते है।

यहाँ हिरण्यकशिपु के घर में प्रह्लाद जन्म लेता है। देवत्व और असुरितत्व के वंश का सूचक शब्द नही बल्कि गुण और दोष को दर्शाने वाला शब्द माना गया है। ये गुण और दोष कई बार एक व्यक्ति में ही पाये जाते है। इसलिये इसके अनुसार समाज का विभाजन करना अनुचित है। आकाश, वायु, पृथ्वी, जल, अग्नि आदि पंचभूतों में व्याप्त सर्वव्यापी, सर्वज्ञानी और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की कल्पना और आराधना जनजाति समाज में सब दूर प्राचीन काल से दिखाई पड़ती है। भारतीय समाज ने विविधता को अपनी विशेषता माना है। अपने भारतीय समाज जीवन में जो परंपरा हमें देखने को मिलती है, उसमें विद्यमान विविधता को विभेद समझने वालों में हम क्या देखते है ? उत्तर है - पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव। विविधता में एकता का अनुभव करना हमारी विशेषता है।

आज कई विघटनकारी विचारधारा वाले, इस भारतीय समाज की विविधता को भेद मानकर, विभिन्न विषयों को तोडमरोड कर पेश करते है। वे समाज में विभाजन हो इस हेतु प्रयास में लगे है। यह अत्यंत चिंताजनक विषय है। हमें इस पर विचार करना होगा कि ऐसे सारे असामाजिक तत्व, विदेशी ताकतों के इशारे पर कार्य कर रहे है। परिणामत: भारत का समाज जीवन कमज़ोर हो रहा है। इसलिये ये सब तत्व केवल असामाजिक ही नही, अराष्ट्रीय भी है। बिना कुछ सोचे निर्लज्ज होकर कुछ भी भकने के लिये ये लोग सन्नद्ध हो जाते है। रावण को और महिषासुर को अपना पूर्वज है यह कहकर अपने भावी पीढ़ी के सामने प्रस्तुत करते है। हम किन प्रकार के अवगुणों को अपने भावी पीढ़ी में विकसित करना चाहते है यह केवल वही जाने। ये सब बातें भावी पीढ़ी में चयन और शांति देखने में उत्सुक समाज के चिंतनशील वर्ग के समझ के परे है।

राष्ट्र जागरण हेतु दशकों से किये जाने वाले प्रयासों के फलस्वरूप आज भारत दुनिया में चमकता हुआ सितारा बनकर उभरा है। इससे असहिष्णु चंद कुछ लोगों ने देश को कमज़ोर करने, भारत के पुत्र रूप सनातन समाज में भेद डालने का षड़यंत्र रचा है। इन्हीं ताकतों के प्रभाव में आकर अपने ही बन्धु छद्म वेष

में हमारे बीच आकर अपने समाज को एक दूसरे के खिलाफ खड़ा कर देश को अन्दर से खोखला करने की अराष्ट्रीय गतिविधि में जुड़े हैं, यह विषय चिंताजनक है। जनजाति समाज के बुजुर्ग वर्ग एवं चिंतनशील युवा पीढ़ी ये सब कारनामे के खिलाफ सजग होने पर भी षड़यंत्रकारी शक्तियों के तीव्र गति से चल रहे क्रियाकलापों के चलते किंकर्तव्यविमूढ़ बनकर खड़े रहने के अलावा बहुत कुछ रचनात्मक कार्य समाज को समृद्धि बनाने के दिशा में करते हुए दिखता नही।

ऐसी स्थिति में वनवासी कल्याण आश्रम ने अपने कार्यकर्ता एवं समाज के हितचिंतकों से आह्वान करता है कि वे इस षड्यंत्र के खिलाफ खड़ा रहने के लिये खुलकर आगे आएँ और व्यापक जनजागरण अभियान में शामिल हों। इस षड्यंत्र का पर्दाफाश करते हुये अपनी भावी पीढ़ी को सांस्कृतिक रक्षण देते हुए उसे बचाने के हर संभव प्रयास में जुट जाएँ। ❑

अमृत वचन

ऐश्वर्य उपाधि या पुरस्कार में नहीं बल्कि इस चेतना में है कि हम उसके योग्य हैं। -अरस्तू

मृत्यु होना तो निश्चित है पर कब होना अनिश्चित है। इसलिए व्यक्ति को नश्वर देह का आध्यात्मिक उपयोग करने पर ध्यान देना चाहिए।

- आचार्य महाश्रमण

सामाजिक संपन्नता का अर्थ है कि मनुष्य सुखी हो, नागरिक स्वतंत्र हो और राष्ट्र महान हो।

-विक्टर ह्यूगो

हमारी सर्वोच्च सभ्यता में भी मनुष्य अभावों में मर जाते हैं। इसका कारण प्रकृति नहीं, मनुष्य का ही अन्याय है। -हेनरी जॉर्ज

प्रेरक प्रसंग

वनवासी महिला पुरुषों ने स्वयं प्रेरणा से सड़क निर्माण का कार्य किया

वर्षों तक सरकार की ओर से दुर्लक्ष होने पर स्थानीय जनजाति समाज ने अपने स्वयं के प्रयासों से सुदूर पहाड़ों में घाट का रास्ता बनाना शुरू किया, जो उनके ग्रामीण क्षेत्र को विशाखापट्टणम् के साथ जोड़ सके। 9 गाँवों के जनजाति लोगों ने स्थानीय उपलब्ध सामग्री को एकत्रित कर तीन सप्ताह तक परिश्रम करते हुए 7 कि.मी. का कच्चा रास्ता बनाया। इसके चलते पूर्वी घाट के दुर्गम स्थानों में जाने की सुविधा हुई। पास की पंचायत से सम्पर्क स्थापित करने 15 कि.मी. का रास्ता बनाने के सिवा इनके पास और दूसरा कोई विकल्प नहीं था। इन 250 परिवारों के 1500 व्यक्तियों का अनुभव कहता है कि कई बार प्रयास करने पर भी कोई मदद नहीं मिल रही थी। वैसे भी इन जनजाति परिवारों तक बिजली तथा चिकित्सा सेवाएँ आज तक पहुँची नहीं हैं। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि गर्भवती महिलाओं को निकटतम स्वास्थ्य केन्द्र पर ले जाना भी बड़ा कठिन है। इन जनजाति लोगों ने 23 जनवरी को काम प्रारम्भ किया और लगभग 3 सप्ताह तक परिश्रम कर 7 कि. मी. लम्बा रास्ता बनाया। प्रतिदिन 2.5 कि.मी. का रास्ता बनाने वाले समूह की रचना कर बारी-बारी से काम किया। इससे एक दूसरा लाभ भी हुआ कि मुका डोरस, कोंडा डोरस और कोंडस ऐसे तीन जनजाति के समुदाय एक हुए। यह अपने आप में बहुत ही महत्वपूर्ण है। आन्ध्र प्रदेश के ग्रामीणों ने देश के समक्ष जो उदाहरण प्रस्तुत किया वैसा अतीत में भी कभी न कभी हुए हैं। बिहार के दशरथ मांझी ने भी अपने गांव जाने हेतु पहाड़ को खोदकर रास्ता बनाया था। ❑

वसंतराव बोलते कम थे लेकिन.....

- अतुल जोग, अ.भा. संगठन मंत्री

अक्तूबर 1995 में शीत काल आरंभ हुआ था। मैं नागालैण्ड में संघ प्रचारक के रुप में कार्यरत था। तब श्री रमेशबाबू द्वारा जानकारी मिली की कुशियाबिल गांव में वनवासी कल्याण आश्रम का कार्यकर्ता प्रशिक्षण आयोजित हो रहा है। स्वाभाविक रूप से मैं भी वहाँ कार्यकर्ताओं को मिलने गया। वहाँ पर प्रथम बार मेरी मुलाकात श्रद्धेय वसंतरावजी के साथ हुई। प्रथम दर्शन में हीं सामान्य से व्यक्तित्व वाले वसंतरावजी की सादगी, स्नेह, आत्मीयता ने मुझे बहुत प्रभावित किया। उस समय वसंतरावजी कल्याण आश्रम के क्षेत्र संगठन मंत्री थे। फिर मुलाकातों का सिलसिला चलता गया।

उस वर्ग में एन.सी.जेलियांग जी को भी देखा। वसंतराव जी ने उनका परिचय कराया तब पता चला कि नागा समाज में हिंदू नेता के रुप में जिनका परिचय है ये वही एन.सी.जेलियांग जी है जो हेराक्का संगठन के प्रमुख है एवं कल्याण आश्रम के अभिभावक भी है। बाद में हेरक्का सम्मेलनों में भी वसंतराव जी के साथ जाना हुआ। उनका कोहिमा जिले के अंगामी जनजाति के नागा समाज के लोगों के साथ मिलना हुआ। वहां पर उनकी **जाफू फिकी फुत्साना केसेको केह** हिंदू संगठन के लोगों से चर्चा हुई। उनके कार्य में कल्याण आश्रम किस प्रकार सहयोग कर सकता है? इस पर विमर्श हुआ। चर्चा में आया कि एक प्राथमिक विद्यालय आरंभ किया जाय। उस विद्यालय हेतु मुझे 1996 में भेजने की योजना बनी। वसंतराव हमारा जाफू फिकी फुत्साना स्कूल देखने पधारे। नागा लोगों के साथ उनका आत्मीयता पूर्ण व्यवहार एवं भोजन में जो उपलब्ध था चावल और सब्जी आनंद के साथ खाते देखा। फिर मै, मेरे सहयोगी बामीबे जेलियांग, एलिहो अंगामी के साथ वसंतराव ने चर्चा की। उन्होंने अपने व्यवहार से हम कार्यकर्ताओं को अनुभव कराया कि ये जो नागा हिंदू है वे जैसे भी हैं अपने हैं। भले कार्य धीमी गति से हो लेकिन उनका विश्वास ही हमारी पूंजी है।

इसी प्रकार वसंतराव जी की पहल से चाखेसांग जनजाति में उन्होंने जगदम्बाजी से चर्चा करते हुए पुणे से आयी नीता बर्वे को भेजने का निश्चय किया और वहां उसने काम खड़ा किया। **चाखेसांगल्हिकेरी लेन्य केजुमी म्हापो** नाम का संगठन चाखेसांग धर्म संस्कृति रक्षा हेतु बनाया गया। वसंतराव अपने व्यवहार से सिखाते थे। हमें एक दिशा मिली कि नागालैण्ड में यह प्रमुख कार्य है। जो भी नागा हिंदू है वह अपना है एवं उसे गले लगाना है। उसके लिए कार्य करना हमारी प्राथमिकता है। साथ ही नागा समाज से कार्यकर्ता खड़े करने को वसंतराव प्रोत्साहित करते रहे। उसी के कारण ईयुहीजी, बामीबे, अदांग, बहन किथुले, अनिंग, तालामसीले, दुलेश्वर ऐसे अनेको नागालैण्ड के कार्यकर्ता खड़े हुए। उनके सुख दु:ख की चिंता करना, उनको प्रोत्साहित करना यह हमें सिखाया।

एक बार उनके साथ डिमापुर में एक परिवार में मिलने

गए। घर झोपड़ीनुमा ही था। बगल में ऐसा ही कच्चा घर था जिसमें उनका राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का हिंदी विद्यालय चलता था। अंदर गए तो इसाई नागा परिवार में नमस्कार के साथ स्वागत हुआ। मेरे लिए आश्चर्य था। फिर उनका नाम पता चला *पियोंग तेम्जन जमीर*। उन्होंने परिचय में बताया कि वे हिंदी के प्रचारक है। याने हिंदी सभी नागा समाज को सिखाने का उनका संकल्प था। उनका आग्रह था कि नागा भाषा रोमन के बजाय देवनागरी लिपि में लिखनी चाहिए, तभी विकसित होगी। हर 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के अवसर पर बड़े कार्यक्रम का आयोजन उनके संस्थान में होता है। मंच पर बड़े अक्षरों में लिखा होता है **भारत जननी एक हृदय हो**। वसंतरावजी की उनके साथ खूब गपशप हुई। तब मेरे जैसे कार्यकर्ता को समझ आया कि नागालैण्ड में रहना है तो ऐसे भारतीय विचार के इसाई लोगों से भी हमें संपर्क रखना होगा। इस प्रकार भारतीयता को ऐसे क्षेत्रों में बनाए रखने के प्रयासों को आगे बढ़ाने की दिशा हमें मिली। वसंतराव बोलते कम थे लेकिन अपने कर्तृत्व से ही बहुत कुछ सम्प्रेषित कर देते थे। इसी प्रकार का कार्य उन्होंने पूरे उत्तर पूर्वांचल में खड़ा किया। छात्रावास, विद्यालय, आरोग्य केंद्र के द्वारा सेवा का कार्य तीव्र गति से उन्होंने बढ़ाया। कार्यकर्ताओं को खड़ा किया। देश के विभिन्न प्रांतों से कार्यकर्ता उत्तर पूर्व में भेजें। उनके सुख-दु:ख की चिंता की। साथ ही देश में भ्रमण करते हुए उत्तर पूर्वांचल की समस्या को लोगों के सामने रखते हुए वसंतरावजी ने पूर्वांचल के विद्यार्थियों के लिए छात्रावास बनाने हेतु प्रेरित किया। आज देश में अनेक स्थानों पर हजारों छात्र पढ़ रहें है। कार्य के विस्तार के पीछे भी वसंतराव की दूरदर्शी सोच थी।

वसंतराव ने विभिन्न जनजातियों में स्वधर्मी संगठन को बढ़ावा दिया। उनके लिए मंदिर निर्माण एवं विभिन्न उपक्रम को गति देते हुए सभी को एक मंच पर लाने का प्रयास किया। उनको साथ मिला- त्रिपुरा में अजय देवबर्मन, असम में जलेश्वर ब्रह्म, नागालैण्ड में एन. सी. जेलियांग, अरुणाचल में तालिम रुकबो, मेघालय में हिप्सन राय, एंडरसन मावरी, मणिपुर में प्रोफेसर गांगसुमई कामई, अबुई कामई जैसे जनजाति नेताओं का। उनके सहयोग से यह कार्य विकसित होकर मानो वटवृक्ष हो गया। आज वर्तमान में विभिन्न सकारात्मक परिवर्तन की घटना उत्तर पूर्वांचल में हो रही है, उसके पीछे वसंतरावजी की तपस्या एवं सोच है। 40 वर्ष पूर्व यही वसंतराव नाम का साधारण सा दिखनेवाला व्यक्ति धोती कुर्ता पहननेवाला, हाथ में लंबा छाता लेनेवाला कार्यकर्ता गुवाहाटी में पहुँचा जहां धर्मांतरण का दुश्चक्र दशकों से छल बल प्रलोभन से चल रहा था, जहाँ देश से अलग होने के स्वर जगह जगह गूंज रहे थे। *ऐसे समय वसंतराव पहुँचे एक संकल्प लेकर यहां के सारे जनजाति समाज को धर्म संस्कृति के आधार पर जोडूँगा, राष्ट्रीयता का स्वर यहाँ की हरी भरी वादियों में गूँजेगा। यहां गाँव-गाँव एवं प्रत्येक जनजाति में वनवासी कल्याण आश्रम की भावधारा को पहुँचाऊँगा। साधन था विश्वास, संबल था आत्मीयता के विचार का।* इस साधारण से दिखनेवाले व्यक्ति ने भगीरथ परिश्रम करते हुए परिवर्तन की गंगा को हमारे आंखों के सामने संगठन के बल पर प्रवाहित किया है। उन्होंने *क्रियासिद्धि: सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे'* अर्थात् महापुरुषों की कार्यसिद्धि व्यक्ति के सत्त्व पर निर्भर करती है, न कि साधनों पर-इस उक्ति को अक्षरश: प्रमाणित किया। ❑

कोलकाता-हावड़ा महानगर का 40वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न एकात्मता की भावना जागृत करना ही कल्याण आश्रम का मुख्य उद्देश्य है : अतुल जोग

- डॉ. रंजना त्रिपाठी, अलीपुर महिला समिति

ॐ मंगल ध्वनि और मंचस्थ उत्सव मूर्तियों द्वारा श्रीराम के चित्र पर माल्यार्पण के साथ पूर्वांचल कल्याण आश्रम के 40 वें वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। मंच पर विराजमान अतिथियों का स्वागत हरित पल्लव से किया गया। तत्पश्चात कल्याण भारती के वार्षिकांक का विमोचन हुआ। इस वर्ष का विशेषांक कल्याण आश्रम के पूर्व संगठन मंत्री स्व. भास्कररावजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केन्द्रित था। इसी श्रृंखला में माननीय बसत दा के जीवन पर आधारित आदरणीय जगदम्बा मल्ल द्वारा लिखित पुस्तक **'पूर्वोत्तर के प्रहरी'** का लोकार्पण भी संपन्न हुआ तथा जगदम्बा जी का शॉल एवं श्रीफल प्रदान कर अभिन्दन भी किया गया।

धर्म-संस्कृति, देश-भक्ति और एकात्मता की भावना जगाना ही कल्याण आश्रम का मुख्य उद्देश्य है, ये उद्‌गार थे कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय संगठन मंत्री माननीय अतुल जोग जी के जो मुख्य वक्ता के रूप में दिनांक 15.12.2019 को पूर्वांचल कल्याण आश्रम के 40 वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। वनवासी अंचलों में अपनी निष्ठावान भूमिका के साथ निरंतर गतिमान पूर्वांचल कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए अतुल जी ने कहा कि बड़े कार्यक्रम की शुरुआत लघु रूप से ही होती है। कार्य को खड़ा करने के लिए समस्या का निवारण करना पडता है और विरोध के स्वर का भी सामना करना पड़ता है। वनवासी संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन करने के लिए अतुल जी ने बालासाहब देशपाण्डे तथा भास्कर राव जी के अतुलनीय त्याग और समर्पण को श्रेय दिया। अतुल जी ने याद दिलाया कि पूर्वोत्तर के राज्यों में कार्य खड़ा करना आसान नहीं था लेकिन कार्यकर्त्ताओं के समर्पण ने इस कार्य को सफल बना दिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद की शोभा बढ़ाती हुई युवा उद्योगपति श्रीमती पूजा गुप्ता ने निष्काम भाव से कार्य कर रहे पूर्वांचल कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं की भूमिका की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कल्याण आश्रम के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

जय श्री राम के उद्‌घोष के साथ अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्रीमान् भगवतीजी जालान ने कहा कि वनवासी प्रेम राष्ट्र-प्रेम है। स्वार्थ को परमार्थ में बदलने का संकल्प दिलाते हुए उन्होंने कल्याण आश्रम के कार्य एवं कार्यकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम के उत्तरार्द्ध में बसंत राव भट्ट जी के कृतित्व और व्यक्तित्व पर आधारित नाटक **'कर्मयोगी'**का सफल एवं जीवंत मंचन हुआ। नाटक के पात्रों ने अपने-अपने अभिनय से सभा- मंडप को मंत्र मुग्ध कर दिया। नाटक का सफल निर्देशन श्रीमती शुभ्रा अग्रवाल द्वारा किया गया तथा पटकथा लेखन का दायित्व संभाला था श्रीमती इंदु नाथानी ने। नाटक के सफल मंचन से अभिभूत होकर नागालैंड कल्याण आश्रम के पूर्व संगठन मंत्री रहे तथा पूर्वोत्तर के प्रहरी

बसंतराव राव भट्ट के लेखक श्री जगदम्बा मल्ल ने भावपूर्ण पत्र लिखकर कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन किया। पत्र इस प्रकार है-

''बसंत राव ने सोचा भी न होगा कि उनके द्वारा बोया हुआ बीज इतना शीघ्र फलदायी वटवृक्ष बनकर दूसरों के लिए प्रेरणादायक उदाहरण का स्वरूप बन जायेगा। आज का कार्यक्रम तथा कल्याण आश्रम के कार्य के विस्तार को देखकर उनकी दिवंगत आत्मा आनन्दित हो रही होगी। कर्मयोगी नाटिका व्यावसायिक कलाकारों को भी मुग्ध करने वाली थी एवं सामान्य दर्शकों को भी समान रूप से आह्लादित कर रही थी। इसकी सफलता का रहस्य आप सभी बहनों की तपस्या और निष्ठा में अन्तर्निहित है। इसी प्रकार एक-एक ईंट जोड़ कर कल्याण आश्रम रूपी भवन निर्माण कार्य को आगे बढ़ाने में आप लोग सफलीभूत होवें, यही मेरी शुभकामना है। आप सब लोग तन व मन से पूर्ण स्वस्थ रहें, आप लोगों का पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन सुखमय होवे, यही मेरी प्रार्थना है। पुनश्च प्रणाम। सभी कलाकार कार्यकर्ताओं को भी मेरा नमन।''

नाटक के संपन्न होने पर निर्देशिका श्रीमती शुभ्रा अग्रवाल का अभिनंदन किया गया एवं पात्रों के उत्साहवर्धन हेतु उन्हें प्रमाणपत्र भी दिए गए। इस वार्षिकोत्सव में महानगर की अनेक सभा, संस्थाओं से जुड़े गणमान्य प्रबुद्धजन, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ तथा कल्याण आश्रम के वरिष्ठ अधिकारी उपास्थित थे। कार्यकर्ताओं की मेहनत लगन एवं निष्ठा से सभी अभिभूत थे। कलामन्दिर का विशाल प्रेक्षागृह दर्शकों से खचाखच भरा था। संगठन के विस्तार में यह आयोजन मील का पत्थर बनकर सबको लम्बे समय तक प्रेरित, स्पंदित करता रहेगा। ❑

जम्मू-कश्मीर में भी कल्याण आश्रम का प्रवेश

हम सभी के लिए यह एक अत्यंत आनंद के समाचार है कि वर्तमान में जन्मू-कश्मीर के कठुआ जिले में अपने कार्य का शुभारम्भ हुआ है। क्षेत्र संगठन मंत्री स्थानीय कार्यकताओं के साथ मिलकर इस हेतु पिछले कई समय से प्रयत्नशील थे। कठुआ जिले में **गद्दी जनजाति** निवासी करती है। उनके बीच बसोली ब्लॉक के **बनी क्षेत्र** में हमने एक नि:शुल्क कोचिंग सेन्टर शुरू किया है। इसका दायित्व ऋषिकेश दिवेकर को दिया गया है। रा.स्व.संघ के विभाग प्रचारक दिलीप कुमार भील ने भी इस हेतु हमें सहयोग किया और जब ये प्रकल्प प्रारम्भ

होने जा रहा था तो उसके शुभारम्भ हेतु आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय सीनियर बैंक मैनेजर अशोक कुमार और सरकारी अधिकारी के रूप में मोहम्मद अय्यूब भट्ट (जोनल शिक्षा अधिकारी) भी उपस्थित रहे। हमें विश्वास है कि इस नि:शुल्क कोचिंग क्लास का गद्दी जनजाति के विद्यार्थियों को निश्चित ही लाभ होगा और जनजाति समाज के साथ अपना सम्बन्ध भी दृढ़ होगा। ❑

मकर संक्रांति पर कल्याण आश्रम की मौन क्रांति

- डॉ. रंजना त्रिपाठी, अलीपुर महिला समिति

टूटे ना कभी डोर वनवासी बन्धुओं
आपके विश्वास की,
छू लो आप जिंदगी की सारी कामयाबी
जैसे पतंग छूती है ऊँचाइयाँ आसमान की

मकर संक्रांति के अवसर पर लगने वाले कल्याण आश्रम के कैम्पों की गतिविधियाँ हृदय को छू लेती हैं। आंखों को नम कर देती है। उत्सव के साथ-साथ मन क्रांति के लिए आंदोलित हो उठता है।

सर्दी का मौसम होता है। सारी प्रकृति सोई सी पड़ी होती है। मकर संक्रान्ति से सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध की ओर आना शुरू हो जाता है। अतएव इस दिन से रातें छोटी एवं दिन बड़े होने लगते हैं। मकर संक्रान्ति पर सूर्य की राशि में हुए परिवर्तन को अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होना माना जाता है। प्रकाश अधिक होने से प्राणियों की चेतनता एवं कार्य शक्ति में वृद्धि होगी; ऐसा जानकर सम्पूर्ण भारतवर्ष में लोगों द्वारा विविध रूपों में सूर्यदेव की उपासना, आराधना एवं पूजन कर उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की जाती है। लगता है अंधकार से प्रकाश की ओर जाने के लिए पशु-पक्षी, जड़-चेतन क्रांति कर रहे हैं। मानव जीवन विधाता की अनुपम सृष्टि है। कल्याण आश्रम से जुड़े कार्यकर्ता बंधु/भगिनी इस क्रांति बेला में और भी सजग और सचेतन होकर समाज के पिछड़े विपन्न और अभावों में जी रहे वनवासी बंधुओं के लिए क्रांति ध्वज लिए आगे चल पड़ते हैं, और क्यों न चल पड़े? जब इस दिन भगवान भास्कर अपने पुत्र शनि से मिलने स्वयं उसके घर जाते हैं। मकर संक्रान्ति के दिन ही गंगाजी भगीरथ के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होती हुई सागर में जाकर मिली थीं। तब कोलकाता-हावड़ा महानगर से जुड़ी समितियाँ भी वनवासी समाज के पुनरुत्थान के लिए लगातार अनेक वर्षों से कोलकाता-हावड़ा महानगर में कैम्पों का आयोजन करती आ रही है। इन कैम्पों के माध्यम से एकत्रित धनराशि, उपयोगी वस्तुएँ, भोजन सामग्री आदि वनवासी बन्धुओं के विकास हेतु नियोजित की जाती है। मकर-संक्रांति के पावन पर्व पर लगने वाले इन कैम्पों में कोलकाता एवं हावड़ा के समाज का अतुलनीय सहयोग रहता है। आप सभी को जानकर आश्चर्य होगा कि कल्याण आश्रम से जुड़ा प्रत्येक कार्यकर्ता इस पुनीत कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता है और प्रचुर मात्रा में धनराशि एवं वस्तुएं एकत्रित कर वनों में रहने वाले हमारे बन्धु-भगिनियों के सपनों को कभी न टूटने देने का संकल्प करता है।

एक तथ्य का उल्लेख करना यहाँ पर आवश्यक हो जाता है कि कल्याण आश्रम का उद्देश्य मात्र धन एकत्रित करना नही अपितु कैम्प के माध्यमों से समाज के उन लोगों को जोड़ना भी है जो समाज के इन तथ्यों से अनभिज्ञ हैं। आप सभी को यह बताते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि संचार क्रांति के इस युग में लगने वाले शताधिक कैम्पो में कई मोबाइल कैम्पों के माध्यम से भी संग्रह किया गया। ये कैम्प लोगों के आकर्षण का केन्द्र भी रहे और समाज के युवा वर्ग को जोड़ने में सफल भी।

पाठकों मकर संक्रांति सिर्फ पर्व नहीं, अपितु मानस - क्रांति अर्थात् सही अर्थों में सम्यक् क्रांति है। ❑

गोसाबा में चिकित्सा शिविर
स्वास्थ्य सेवा-नारायण सेवा

- विवेक गोयल, प्रांत चिकित्सा प्रमुख

पूर्वांचल कल्याण आश्रम का एक दिवसीय गोसाबा चिकित्सा शिविर दिनांक 1 मार्च गोसाबा स्थित प्रीतिलता कन्या छात्रावास में सोत्साह सम्पन्न हुआ। प्रकृति की गोद में बसे सुंदरवन के लाड़-प्यार में पल रहे गोसाबा तक की यह यात्रा प्रत्येक यात्री के मन पर अपनी अमिट छाप छोड़ गई। आइए इस यात्रा की सुखद स्मृतियों को आपके साथ साझा करें।

एक दिन के इस शिविर में 6 चिकित्सकों ने 5 चिकित्सा विज्ञान के छात्रों के सहयोग से लगभग 346 रोगियों का स्वास्थ्य परीक्षण कर औषधियाँ वितरित की। कोलकता-हावड़ा महानगर से बंधु/भगिनी कार्यकर्ताओं के सहयोग से चिकित्सा की सुविधाओं से विपन्न ग्रामवासियों का वजन मापना, रक्त-चाप मापना, मधुमेह के स्तर को जाँचना दवाईयां देना आदि कार्यों में अपनी महत्वपूर्ण सेवायें देना साथ ही पौष्टिकता संवर्धन हेतु सेव एवं केले भी दिए गए। चल पाने में असमर्थ वरिष्ठ नागरिकों को छड़ी भी साभार दी गई।

शंकर नेत्रालय के तत्वाधान में ग्रामवासियों की आँखों की चिकित्सा की जा रही थी। चिकित्सकों की तन्मयता और तल्लीनता को देखकर मन भावविभोर हो उठा।

इस बार के चिकित्सा शिविर में अपने स्वास्थ्य एवं स्वच्छता से अनभिज्ञ महिलाओं में महानगर की अवनी समिति द्वारा सेनेटरी नैपकिंस भी प्रदान किए गए ।

एक सुखद सूचना देते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि दिनांक 13 मार्च को शंकर नेत्रालय के सहयोग से चिन्हित वनवासी बंधुओं के लिए मोतियाबिंद की शल्य चिकित्सा कराई गई।

इस शिविर का मुख्य आकर्षण प्रीतिलता छात्रावास में रहने वाली छात्राओं के साथ बातचीत करना था। पूर्णकालिक भगिनी कार्यकर्ता रेवती मण्डल के संरक्षण में अपने सपनों को साकार करने वाली छात्राओं ने समवेत स्वरों में प्रात: वंदना, सरस्वती वंदना का पाठ भी किया।

भोजनालय में सुरुचिपूर्ण एवं स्वादिष्ट भोजन भी छात्रावास से जुड़े कार्यकर्ताओं द्वारा बनाया गया था जिसे कोलकाता महानगर से गए हुए कार्यकर्ताओं को परोसा गया।

शिविर से प्रस्थान के पूर्व सभी ने अपने अनुभवों को बाँटा। शिविर में गए सभी चिकित्सक वनवासी बंधुओं का स्वास्थ्य परीक्षण कर सात्विक आनन्द की अनुभूति कर रहे थे। उन्होंने कल्याण आश्रम के सेवाकार्यों की हृदय से प्रशंसा की। यह भी संकल्प लिया गया कि समाज से और भी युवा वर्ग जुड़े। प्रीतिलता छात्रावास से विदा लेकर फिर आने के संकल्प के साथ हम महानगर लौट तो आए किन्तु मन वहीं छूट गया।

सारांशत: यह चिकित्सा शिविर सभी चिकित्सकों, छात्र चिकित्सकों, महानगर के सहयोगी कार्यकर्ताओं तथा स्थानीय कार्यकर्ताओं की समर्पित सेवाओं के कारण बहुत सफल रहा। ❑

रोमाञ्चक और चिरस्मरणीय वनयात्रा

-संजय गोयल, मध्यनगर प्रमुख कोलकाता महानगर

पूर्वांचल कल्याण आश्रम द्वारा आयोजित ओड़िशा प्रांत की वनयात्रा करने का अनुभव बहुत रोमाञ्चक एवं सुखद रहा। हम 16 व्यक्ति 23 जनवरी को हावड़ा स्टेशन से रवाना होकर चार दिवसीय यात्रा के लिए बरहमपुर (ब्रह्मपुत्र) वहाँ से बस द्वारा पोडरवल गए। सर्वप्रथम हमें वहाँ का कृषि मेला देखने का सौभाग्य मिला। हम शहरवासियों के लिए कृषि मेला देखना

प्रसन्न मुद्रा में वनयात्री

एक अद्‌भुत और सुखद अनुभव रहा। इस मेले में वनवासियों द्वारा निर्मित वस्तुओं का संग्रह था। कल्याण आश्रम द्वारा सिखाई गई वस्तुओं का प्रदर्शन था। वनवासियों ने लगभग 55 प्रकार की वस्तुओं का निर्माण करना सीखकर एक मिसाल कायम की है। मनलुभावनी वस्तुओं को देखकर हम सभी मंत्रमुग्ध हो गये। अपने स्थान पर रहते हुए जीविकोपार्जन करने का कौशल सिखाकर कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता अपने दायित्व का संवेदनापूर्वक निर्वाह कर रहे हैं।

प्रत्येक रविवार को एक बड़े हॉल में प्रार्थना सभा का आयोजन होता है। उड़िया भाषा में 11 बजे से 2 बजे तक विभिन्न गाँवों से आए पुरुष एवं महिलाएं भजन गायन करती है। सभी उपस्थितजनों से कृषि संबंधित चर्चाएँ होती है। यहाँ पर बाल संस्कार केन्द्र भी चलते हैं जिसमें बालकों को भजन एवं देशभक्ति के गीत सिखाए जाते हैं। बालक-बालिकाओं ने वाद्य यंत्र बजाते हुए सुमधुर गायन करके हम सभी का अविस्मरणीय स्वागत किया। सभी वनयात्री भावविभोर हो गए। शहरों से दूर विलुप्त होते हुए भारतीय संस्कारों का वहाँ अवलोकन कर मन उल्लसित हो गया। 25 तारीख को हम सभी कमलागुड़ी पहुँचे। वहाँ पर आरोग्य केन्द्र के कार्यकर्ता अस्पतालों से जुड़े हुए हैं। वे समय-समय पर अपनी सेवाएं ग्रामवासियों को देते रहते हैं। उनके इस कार्य से वहाँ पर बालकों में मृत्यु दर में कमी आई है तथा वे कुपोषण का शिकार नहीं हो रहे हैं। 'झिनझीरी' आरोग्य केन्द्र में पिछले कई सालों से लगभग 43

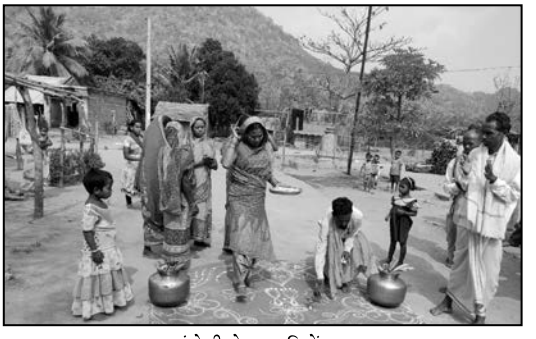

सुन्दर रंगोली से वनयात्रियों का स्वागत

हजार रोगियों की चिकित्सा की गई। आस-पास ईसाई मिशनरियों से घिरा यह स्थान डॉक्टर्स एवं सहयोगियों के लिए चुनौती है जिसका वे डटकर सामना कर रहे हैं। एक छोटे से अस्पताल का भी निर्माण किया गया। इस यात्रा ने हमारे सूखे हृदय को तरल आत्मीय स्पर्श से भिगो दिया।

लोक कलामण्डल-लोककला मण्डल की महिलाओं द्वारा डांडिया नृत्य एवं गायन प्रस्तुत किया गया। पूरा नृत्य तालयुक्त था। उनकी भाषा हम नहीं समझ पा रहे थे पर कलाकरों के मनोभावों को हम सभी ने महसूस किया। 30 साल पूर्व प्रारंभ किए गये कार्यों के परिणाम दिखाई देने लगे हैं। लोक कला एवं परम्पराओं का विनाश न हो यह ही कल्याण आश्रम का उद्देश्य रहा है।

श्रद्धाजागरण केन्द्र- बोण्डागुड़ी गाँव में जगन्नाथ भगवान के मन्दिर की स्थापना की गई है। जिसमें प्रत्येक गुरुवार को आसपास के पुरुष-महिलाओं द्वारा भजन-कीर्तन का आयोजन किया जाता है।

स्वयं सहायता केन्द्र - कल्याण आश्रम के इस केन्द्र से 500 महिलाएं जुड़ी हुई हैं। महिलाओं को कृषि, व्यंजन निर्माण इत्यादि का प्रशिक्षण देकर उन्हें तैयार किया जाता है ताकि वे स्वयं आत्म निर्भर बन सके। उन्हें मिलने वाली सरकारी सुविधाओं से परिचित कराया जाता है। परिणामस्वरुप सभी ने अपने बैंक खाते खोल लिए हैं। अपना जीवन यापन सुचारु रूप से करने लगी हैं। अपने बच्चों को भी शिक्षित करने लगी हैं। कल्याण आश्रम के प्रयासों से वे स्वाभिमानपूर्वक अपने पैरों पर खड़ी हैं।

रायका बालक छात्रावास- इस छात्रावास की स्थापना सन् 1990 में की गई थी। बालकों से हमारा परिचय कराया गया एवं हमने उनकी गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। बच्चों की संस्कारयुक्त दिनचर्या से हम सभी अभिभूत हुए। सारे वनवासी गाँवों में भ्रमण करने के पश्चात नए अनुभवों को समेटे सभी कार्यकर्ता अन्तिम दिन पुरी में जगन्नाथ भगवान के दर्शन करने गए। प्रभु से यहीं प्रार्थना है कि हम अपनी अन्तिम सांसों तक देश हित के कार्यो में जुड़े रहें। ❑

किशोर बालकों ने भी सीखी सिलाई

- किरण मंत्री, सह स्वावलम्बन प्रमुख

कौशल विकास पुकार में नहीं, कौशल में है दम।
देश के सितारे तुम छू लो अपनी मंजिल।।

मानव जीवन प्राप्त करना एक सुखद यात्रा है। यह यात्रा और भी उत्साहवर्धक हो जाती है, यदि जीवन विभिन्न कौशलों से परिपूर्ण हो। कल्याण आश्रम इस दिशा में नित नए इतिहास गढ़ता रहता है। इस बार कौशल विकास की दिशा में 9 किशोर बालकों को कल्याण भवन बुलाकर सिलाई प्रशिक्षण दिया गया।

किशोर बालकों ने 11 तरह के कपड़े सिलाई करना सीखा। प्रति बार की तरह प्रशिक्षण समाप्ति पर सभी को प्रमाण पत्र वितरित किये गए।

कुछ अधूरी ख्वाहिशें,
कुछ घुटे सपने
फिर से युवा हो रहे हैं तुममें
निखरेगा तुम्हारा कौशल
हौसला देंगें हम तुम्हें
अपनी मंजिल चुनने का।

कुल मिलाकर वनवासी युवकों को सिलाई सिखाने का अभिनव निर्णय एवं अनुभव बहुत ही सुखद एवं आनन्ददायी रहा। सभी ने अत्यंत मनोयोग पूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त किया। युवकों की अभिरुचि और तल्लीनता देखकर सभी कार्यकर्ता प्रसन्न थे। ❑

ममता, स्नेह और करुणा की प्रतिमूर्ति थीं दमयंती जी

- अंजलि साबू, ग्वालियर

राम-हनुमान के चित्र का पूजन करती हुई दमयंती जी

पूर्वांचल कल्याण आश्रम की महानगर महिला समिति की संरक्षिका श्रीमती दमयंती देवी का निधन गत 23 फरवरी रविवार को प्रात:काल हुआ। ओड़िशा प्रांत के संबलपुर में जन्मी दमयंती जी बियानी, कोलकाता महानगर की पूर्व संरक्षिका, का बैकुण्ठवास अनेक यादों को ताजा कर गया। कल्याण आश्रम के हर छोटे बड़े कार्यकर्ता की वे स्नेहमयी चाची जी थी। वनवासी कल्याण आश्रम से पिछले 30 वर्षों से अंतरंग रूप से जुड़ी रहीं। अपने मधुर व्यवहार से वे सभी का दिल जीत लेती थी। बड़ों को प्रेम और छोटों को अपनत्व की मजबूत धागों से बांधने की कला वे बखूबी जानती थी। कब कहना, कैसे कहना और कितना कहना के गुरु मंत्र को हृदय में

दीपक योजना की सूत्रधार

रखकर कल्याण आश्रम की **दीपक योजना** को उन्होंने भव्य स्वरुप दिया। **तमसो मा ज्योतिर्गमय** की भावधारा से सम्प्रेरित होकर प्रकाश को घर-घर को फैलाने के लिए कुम्हार से कच्ची मिट्टी के दीपक लेकर कार्यकर्ताओं को उन दीपकों में चित्रकारी करने की प्रेरणा दी। चलो जलाएँ दीप वहाँ, *जहाँ अभी भी अंधेरा है*-इस भाव को हर हृदय में बसा दिया। सुन्दर दीपक देश और विदेश में पहुँचे। इन दीपकों ने कल्याण आश्रम को अपनी सुन्दरता से हर दिशा में आलोकित कर दिया। दीपक निर्माण के अतिरिक्त भागवत कथाओं में चाची जी का सहयोग अतुलनीय रहा। किसी अपरिचित को भी मोह लेने

मकर संक्रांति कैंप में वनवासी बंधुओं के लिए संग्रह करते हुए।

वाली आदरणीय चाचीजी का पार्थिव शरीर भले ही हमारे बीच न हो लेकिन उनकी सीख, उनके सद्गुण सदैव चिरस्थायी रहेंगे। उनके चेहरे की मुस्कान और उस पर पड़ी अनुभव की रेखाएं हम सबके मन में असीम शांति और प्रेरणा भर देती है। सभी के मन में अपनी छवि बिठाकर अपने आदर्शों की छाप सभी के लिए छोड़ गई हैं। हमारा उनको शत -शत नमन। ❑

शोक संवाद

मा.बाला साहब दीक्षित नहीं रहे

वनवासी कल्याण आश्रम के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक मा.श्री गजानन यशवंत बालासाहब दीक्षित हमारे बीच नहीं रहे। सोमवार दिनांक 24 फरवरी को देर रात 1 बजे (25 फरवरी) उन्होंने अंतिम सांस ली। वे 93 वर्ष के थे और वृद्धावस्था के कारण बीमार चल रहे थे। नासिक स्थित वनवासी कल्याण आश्रम के प्रांत कार्यालय में उनका निवास था। ।।ओम शांति।। ❑

श्री रामनिवास जैन का निधन

दिनांक 05/03/2020 रात्रि लगभग 10 बजे दिल्ली में श्री रामनिवास जैन जी का हृदयगति रुक जाने के कारण निधन हो गया। जैन साहब सेवा समर्पण संस्थान लखनऊ इकाई के अध्यक्ष व पूर्वी उत्तर प्रदेश इकाई के उपाध्यक्ष रहे। उनका इस प्रकार असमय जाना पूरे संघ विचार परिवार सहित सम्पूर्ण समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा परिवार जनों व शुभेच्छ जनों को यह अपार दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करे। ॐ शांति: शान्ति: शान्ति: ❑

सुधा श्रीवास्तव का दु:खद निधन

श्रीमती सुधा श्रीवास्तव 77 वर्ष की थी और वनवासी कल्याण आश्रम, पूर्वी उत्तर प्रदेश की सक्रिय कार्यकर्ता थी। पिछले 3 वर्ष से आगरा वनवासी कन्या छात्रावास में रह रही थी। वे सब बच्चों की दादी थी उनसे बच्चे खूब लाड प्यार करते थे, वह भी सब लोगों की घरेलू नुस्खों से दवाई करती थी। अचानक 19 दिसम्बर 2018 को उनको सीने में दर्द उठा और जोर का हार्टअटैक हुआ। आधे घंटे में हॉस्पिटल में एडमिट किया और वे वेंटिलेटर पर आ गई लेकिन अगले दिन 20 दिसम्बर 2018 को उनका शरीर शांत हो गया। ऐसी सुधा दीदी की मुक्ति हो गई। उनके बच्चे – आशुतोष जी व मयंक गाजियाबाद में सीनियर एडवोकेट हैं। उनके सारे क्रिया कर्म जौनपुर में ही संपन्न हुए। भगवान से यही प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति दें। ❑

कल्याण आश्रम परिवार
सभी दिवंगत आत्माओं के प्रति
अश्रुपूरित श्रद्धाञ्जलि
अर्पित करता है।

अनुकरणीय

- तारा माहेश्वरी

☞ वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा संचालित शिक्षा एवं संस्कार प्रकल्पों के माध्यम से वनवासी छात्रों को तराशने का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। जिस परिवार से किसी ने पाठशाला का मुख नहीं देखा ऐसे ही परिवार का बालक सुरेश कल्याण आश्रम के छात्रावास में पढ़कर 95 प्रतिशत अंक बोर्ड की परीक्षा में लाकर सबको आश्चर्यचकित कर देता है। पूरा गांव ही हर्षोल्लास से झूमने लगता है। झारखंड के तपकरा (खूँटी जिला) का बालक सोहन इसरो में वैज्ञानिकों की टीम का सदस्य बनता है और चन्द्रयान-2 के सफल परीक्षण में सहभागी बनता है।

नागालैण्ड के टेनिंग स्कूल के वनवासी बालक चिल्ड्रेन साईंस कांग्रेस की प्रतिवर्ष होने वाली प्रतियोगिता में नागालैण्ड राज्य का गत 4 वर्षों से प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

☞ अधिकाधिक लोगों को तक वनवासी सेवा एवं संगठन कार्यों का सदेंश पहुँचे इस पवित्र भाव से अनुप्राणित होकर कल्याण आश्रम के सक्रिय कार्यकर्ता श्री राजेश अग्रवाल ने मकर संक्रान्ति के पत्रक अपने सभी व्हाट्सअप ग्रुप में भेजे। पत्रक पढ़कर उनके मुम्बई के मित्र का तत्काल उनके पास फोन आया एवं उन्होंने कार्य से संबंधित अनेक जिज्ञासाएँ की। सभी का समुचित समाधान पाकर वे सज्जन हमारे कार्य से इतने अधिक प्रभावित हुए कि दूसरे दिन ही एक लाख रुपये का चेक राजेश अग्रवाल को वनवासी सेवा कार्यों हेतु भेज दिया। कल्याण आश्रम परिवार उनकी सदाशयता, उदारता और परोपकार वृत्ति का अभिनंदन करता है।

☞ मकर संक्रांति से जुड़े कुछ रोचक किन्तु क्रांतिकारी तथ्यों से भी आपको अवगत कराऊँ। बात है इस वर्ष मकर संक्रांति के अवसर पर लेकटाउन में लगने वाले कैम्प की। कैम्प लगा हुआ था। लोग आ जा रहे थे। कुछ रुकते जानकारी प्राप्त करते, साथियों का उत्साहवर्धन करते। तभी एक अद्भुत घटना घटी। अपने विद्यालय की ओर जा रहा एक दस वर्ष का बालक कैम्प में आया। उसकी आँखों में कौतूहल और चेहरे पर जिज्ञासा के भाव थे। उसने कैम्प से जुड़ी तमाम बातें जानने की कोशिश की और कुछ हद तक सफल भी हुआ। फिर उसने अपनी जेब में हाथ डाला, टटोला और दस रुपए का नोट निकाला। उसे देते हुए उसकी आँखें भर आईं। कहने लगा उसके पास आज इतना ही है, वह इतना प्रभावित है कि होने पर और क्या-क्या नहीं दान कर पाता। मित्रों! बात सिर्फ दस रुपए की नहीं है। बात है मानस क्रांति की, हृदय परिवर्तन की!

हृदय परिवर्तन मानस आंदोलन की पटकथा अभी पूरी नहीं हुई। घटना बड़बाजार में लगने वाले कैम्प से जुड़ी है। एक मुटिया ने कैम्प की गतिविधियों से प्रभावित होकर अपनी होने वाली दैनिक कमाई से जो कि मात्र 100 रुपए थी उसे ही लाकर कैम्प में दान किया। धनराशि देते समय श्रम देवता की आँखों में प्रसन्नता के आँसू थे। कल्याण आश्रम इन कैम्पों के माध्यम से समाज के हर तबके लोगों के दिल में जगह बनाता चला जा रहा है। बधाई !! ❑

बोधकथा.....

मिट्टी और मटका

मिट्टी कुम्हार से बोली - मुझे पात्र बना दो।
कुम्हार ने कहा - क्यों? किसलिए?
मिट्टी बोली - मुझमें पानी रह सके और लोग अपनी प्यास बुझा सकें, तो मेरी सार्थकता होगी।
कुम्हार ने कहा - तुम्हारी आकांक्षा तो ठीक है पर पात्र बनने के लिए बहुत कुछ सहना होगा। पहले फावड़े को सहना पड़ेगा, फिर गधे को सहना पड़ेगा, फिर चाक पर चढ़ोगी, बाद में आग में तपाई जाओगी। इतना सब सहने की हिम्मत है? यदि यह सब न सह सको तो इसी स्थिति में भूमि की गोद में पड़ी रहो। मिट्टी ने कहा - मैं तैयार हूँ।
एक पूरी प्रक्रिया चली और घड़ा बन गया। खरीदा गया। गर्मी के मौसम में भोजन के बाद ठण्डा-ठण्डा पानी पिया गया। ऐसा लगा मानो अमृत ही पिया गया है। उस मिट्टी ने अपने आपको सफल माना कि मुझमें रखा हुआ पानी कितने चाव और प्रीति के साथ पीया जा रहा है। उसे अपनी सार्थकता का भी अनुभव हुआ। प्रत्येक व्यक्ति के मन में सफलता की आकांक्षा होती है। वह सफल और सार्थक जीवन जीना चाहता है। कोई भी निरर्थक और विफल जीवन जीना पसंद नहीं करता। किंतु सफल जीवन जीने के लिए कितना प्रयत्न और पुरुषार्थ करना पड़ता है। इसकी यदि तैयारी हो तो सफलता निश्चित मिल सकती है। यदि वह तैयारी नहीं है तो सफलता की आकांक्षा को छोड़कर मिट्टी जैसी अवस्था में रहना होगा। यहां मिट्टी ने सार्थक जीवन जीने का संकल्प किया। उसकी प्रक्रिया कष्टपूर्ण अवश्य रही, किंतु उसकी इच्छा पूरी हुई। ❑

कविता.....

बने कार्यकर्ता

स्वयं सेवकों का यही एक सपना ।
बनें कार्यकर्ता,जगे धर्म अपना ।।ध्रु।।
कोई श्यामवर्णी, कोई गौरवर्णी।
कोई शांतभावी, कोई क्रोध-कर्मी ।।
सभी मित्र बनकर करें काम मिलकर ।।
कोई हो नवागत,तो कोई पुराना।।1।।
बनें कार्यकर्ता .....
न पूर्वाग्रही हो, न हो आत्मभावी ।
हृदय मन खुला हो, विवेकी स्वभावी।।
विचारों में स्थिरता वचन में मधुरता ।।
परायों व अपनों की निंदा से बचना।।2।।
बनें कार्यकर्ता .....
उमंगी रहे हम, उमंगी हो साथी।
गति भी रहे, आपसी मेल खाती ।।
अकेले न हो हम यही ध्यान हरदम ।।
कदम से कदम को,मिलाकर ही चलना।।3।।
बनें कार्यकर्ता .....
हो चिंतन हमारा, सदा दूरगामी।
मगर कार्यशैली, हो एक-एक कदमी ।।
सभी काम भारी हो परिणामकारी ।।
सफलता मिलेगी, यही भाव भरना।।4।।
बनें कार्यकर्ता .....
वाचन, मनन और अनुभव कथन से ।
रखें अद्यतन ज्ञान,बौद्धिक जतन से।।
सदा स्वस्थ हो हम रहे व्यस्त भी हम ।।
समय-दान-क्षमता, बढ़ाते ही रहना।।5।।
बनें कार्यकर्ता ..... ❑

गोसाबा में चिकित्सा शिविर

आओ एक कदम बढ़ाएं,
वनवासी को स्वस्थ बनाएँ।

सिलाई प्रशिक्षण

नित जीवन के संघर्षों से टूट चुका हो, जब वनवासी का अन्तर्मन।
तब कौशल भारत का लक्ष्य बनाए, कल्याण आश्रम का जन-मन।।

मकर संक्रान्ति कैम्पों के दृश्य

बांगुर महिला समिति

झलकारी बाई महिला समिति

कुम्हारटोली महिला समिति

न्यूटाऊन महिला समिति

राम मन्दिर महिला समिति

वी.आई.पी. टॉवर महिला समिति

आई लेकर नव विहान देखो आई प्यारी संक्रांति।
वनबंधु का महके जीवन, लायेंगे फिर नव क्रांति।।

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com

Printed Matter

Book - Post